॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिताम्बिका दिव्याष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्रम्

।। पूर्व-पीठिका—श्रीषण्मुख उवाच ।।

वन्दे विघ्नेश्वरं शक्तिं, वन्दे वाणीं विधिं हरिम्।
वन्दे लक्ष्मीं हरं गौरीं, वन्दे माया महेश्वरम् ।।१।।
वन्दे मनोन्मयीं देवीं, वन्दे देवं सदा-शिवम्।
वन्दे पर-शिवं वन्दे, श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।२।।
पञ्च-ब्रह्मासनासीनां, सर्वाभीष्टार्थ-सिद्धये।
सर्वज्ञ! सर्व-जनक!, सर्वेश्वर! शिव! प्रभो! ।।३।।
नाम्नामष्टोत्तर-शतं, श्रीदेव्याः सत्यमुत्तमम्।
श्रोतुमिच्छाम्यऽहं तात!, नाम-सारात्मकं स्तवम् ।।४।।

।। श्रीशिव उवाच ।।

तद् वदामि तव स्नेहाच्छृणु षण्मुख! तत्त्वतः।
महा-मनोन्मनी[१] शक्तिः[२], शिव-शक्तिः[३] शिव-शङ्करी[४]।
इच्छा-शक्ति[५]: क्रिया-शक्तिः[६], ज्ञान-शक्ति-स्वरूपिणी[७] ।। १।।
शान्त्यातीता कला[८] नन्दा[९], शिव-माया[१०] शिव-प्रिया[११] ।
सर्वज्ञा[१२] सुन्दरी[१३] सौम्या[१४], सच्चिदानन्द - विग्रहा[१५] ।।२।।
परात्परा-मयी[१६] बाला[१७], त्रिपुरा[१८] कुण्डली[१९] शिवा[२०]।
रुद्राणी[२१] विजया[२२] सर्वा[२३], सर्वाणी[२४] भुवनेश्वरी[२५] ।। ३।।
कल्याणी[२६] शूलिनी[२७] कान्ता[२८], महा - त्रिपुर - सुन्दरी[२९]।
मालिनी[३०] मानिनी[३१] शर्वा[३२], मग्नोल्लासा[३३] च मोहिनी[३४] ।।४।।
माहेश्वरी[३५] च मातङ्गी[३६], शिव-कामा[३७] शिवात्मिका[३८] ।
कामाक्षी[३९] कमलाक्षी[४०] च, मीनाक्षी[४१] सर्व-साक्षिणी[४२] ।।५।।
उमा-देवी[४३] महा-काली[४४], श्यामा[४५] सर्व-जन-प्रिया[४६] ।
चित्-परा[४७] चिद्-घनानन्दा[४८], चिन्मया[४९] चित्-स्वरूपिणी[५०] ।।६।।
महा-सरस्वती[५१] दुर्गा[५२], ज्वाला दुर्गाऽति - मोहिनी[५३-५४]।
नकुली[५५] शुद्ध-विद्या[५६] च, सच्चिदानन्द - विग्रहा[५७] ।। ७।।
सु-प्रभा[५८] स्व-प्रभा[५९] ज्वाला[६०], इन्द्राक्षी[६१] विश्व-मोहिनी[६२]।
महेन्द्र-जाल-मध्यस्था[६३], माया-मय-विनोदिनी[६४] ।। ८।।

शिवेश्वरी[६५] वृषारूढा[६६], विद्या - जाल - विनोदिनी[६७] ।
मन्त्रेश्वरी[६८] महा-लक्ष्मीर्महा-काली[६९-७०] फल-प्रदा[७१] ।। ९।।
चतुर्वेद - विशेषज्ञा[७२], सावित्री[७३] सर्व - देवता[७४] ।
महेन्द्राणी[७५] गणाध्यक्षा[७६], महा-भैरव-मोहिनी[७७] ।।१०।।
महा-मयी[७८] महा - घोरा[७९], महा - देवी[८०] मदापहा[८१] ।
महिषासुर-संहन्त्री[८२], चण्ड - मुण्ड - कुलान्तका[८३] ।।११।।
चक्रेश्वरी चतुर्वेदा[८४], सर्वादिः[८५] सुर - नायिका[८६] ।
षड्-शास्त्र-निपुणा[८७] नित्या[८८], षड्-दर्शन-विचक्षणा[८९] ।।१२।।
काल - रात्रिः[९०] कलातीता[९१], कवि-राज - मनोहरा[९२] ।
शारदा तिलका[९३] तारा[९४], धीरा[९५] शूर-जन-प्रिया[९६] ।।१३।।
उग्र-तारा[९७] महा -मारी[९८], क्षिप्र-मारी[९९] रण-प्रिया[१००] ।
अन्न-पूर्णेश्वरी माता[१०१], स्वर्ण-कान्ति-तटि-प्रभा[१०२] ।। १४।।
स्वर-व्यञ्जन-वर्णाढ्या[१०३], गद्य-पद्यादि -कारणा[१०४]।
पद-वाक्यार्थ-निलया[१०५], विन्दु-नादादि-कारणा[१०६] ।। १५।।
मोक्षेशी महिषी नित्या[१०७], भुक्ति-मुक्ति - फल - प्रदा[१०८] ।
विज्ञान-दायिनी प्राज्ञा[१०९], प्रज्ञान-फल-दायिनी[११०] ।। १६।।
अहङ्कारा कलातीता[१११], परा - शक्तिः परात्परा[११२] ।
नाम्नामष्टोत्तर-शतं, श्रीदेव्याः परमाद्भुतम् ।। १७।।

।। फल-श्रुति ।।

सर्व - पाप - क्षय करं, महा-पातक - नाशनम् ।
सर्व-व्याधि-हरं सौख्यं, सर्व - ज्वर - विनाशनम् ।। १।।
ग्रह - पीडा - प्रशमनं, सर्व - शत्रु - विनाशनम् ।
आयुरारोग्य - धनदं, सर्व - मोक्ष - शुभ - प्रदम् ।। २।।
देवत्वममरेशत्वं, ब्रह्मत्वं सकल - प्रदम् ।
अग्नि-स्तम्भं जल-स्तम्भं, सेना-स्तम्भादि-दायकम् ।। ३।।
शाकिनी - डाकिनी-पीडा, हाकिन्यादि-निवारणम् ।
देह - रक्षा - करं नित्यं, पर - तन्त्र - निवारणम् ।। ४।।
मन्त्रं यन्त्रं महा-तन्त्रं, सर्व - सिद्धि - प्रदं नृणाम् ।
सर्व - सिद्धि - करं पुंसां, अदृश्यत्वाकरं वरम् ।। ५।।

सर्वाकर्ष-करं नित्यं, सर्व -स्त्री - वश्य-मोहनम् ।
मणि - मन्त्रौषधीनां च, सिद्धिदं शीघ्रमेव च ।। ६।।
भयश्चौरादि - शमनं, दुष्ट - जन्तु - निवारणम् ।
पृथिव्यादि-जनानां च, वाक्-स्थानादि-परो वशम् ।। ७।।
नष्ट - द्रव्यागमं सत्यं, निधि - दर्शन - कारणम् ।
सर्वथा ब्रह्मचारीणां, शीघ्र - कन्या - प्रदायकम् ।। ८।।
सुपुत्र - फलदं शीघ्रं, अश्व - मेध - फल-प्रदम् ।
योगाभ्यासादि-फलदं, श्री-करं तत्त्व - साधनम् ।। ९।।
मोक्ष - साम्राज्य - फलदं, देहान्ते परमं पदम् ।
देव्याः स्तोत्रमिदं पुण्यं, परमार्थं परमं पदम् ।। १०।।
विधिना विष्णुना दिव्यं, सेवितं मया च पुरा ।
सप्त - कोटि-महा - मन्त्र-पारायण- फल - प्रदम् ।। ११।।
चतुर्वर्ग - प्रदं नृणां, सत्यमेव मयोदितम् ।
नाम्नामष्टोत्तर - शतं, यच्छाम्यऽहं सुख - प्रदम् ।। १२।।
कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल - सौभाग्य - प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।। १३।।

।। मन्त्र-राज-कल्पे मोक्ष-पादे स्कन्देश्वर-संवादे श्रीललिता-दिव्य-अष्टोत्तर-शत-नाम-- स्तोत्रम् ।।

इस स्तोत्र के प्रारम्भ में **गणेश, सरस्वती, ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, शिव, पार्वती, त्रिपुर-सुन्दरी** आदि की **वन्दना** कर **कार्तिकेय** जी- **श्रीदेवी के १०८ नामों** की जिज्ञासा करते हैं और **शिव जी** उन नामों को सुनाते हैं, जो १ से १७ तक श्लोकों में स्पष्ट ही हैं।

फल-श्रुति के अनुसार सभी **रोगों**, सभी **ज्वरों, ग्रह-पीड़ादि** को शान्त करनेवाला और सभी **शत्रुओं** का नाशक यह स्तोत्र है। इसके पाठ करने से **दीर्घायु, आरोग्य, धन** और **मोक्ष** की प्राप्ति होती है।

अन्त में **श्रीराज-राजेश्वरी श्री त्रिपुर-सुन्दरी की वन्दना** की गई है।

परम पूज्य गुप्तावतार बाबाश्री के संग्रह के अनुसार **श्रीषोडशी** के उपासकों को उक्त स्तोत्र की अन्तिम पंक्ति निम्न प्रकार पढ़ना चाहिए-

सर्वानन्द-प्रदां सदा-शिव-मयीं वन्दे परां षोडशीम् ।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिताम्बिका-दिव्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली-होम-साधना

।। विधि ।।

अपने दाहिने एक हाथ लम्बी-चौड़ी तथा एक अङ्गुल ऊँची बालुका (रेत) की '**वेदी**' बनाए। '**वेदी**' को '**मूल-मन्त्र**' अथवा **श्रीललितायै नमः** नमस्कार-मन्त्र पढ़कर देखे। '**फट्**'-मन्त्र पढ़कर '**पञ्च-पात्र**' के पवित्र जल से '**वेदी**' का '**प्रोक्षण**' करे। दुबारा '**फट्**'-मन्त्र पढ़कर '**कुश**' के अग्र भाग से '**वेदी**' का '**ताड़न**' करे। '**हुम्**'-मन्त्र पढ़कर एक मूठी जल द्वारा '**वेदी**' का '**सिञ्चन**' करे।

फिर '**अग्नि**' लाए। '**अग्नि**' का एक अङ्गार-'**मूलं हूं फट् क्रव्यादेभ्यः**'-यह मन्त्र पढ़कर '**नैर्ऋत्य कोण**' में क्रव्याद का अंश समझ कर गिरा दे। तब '**अग्नि**' को '**मूल-मन्त्र**' पढ़ते हुए '**वेदी**' पर रखे और '**समिधा**' रखकर अग्नि प्रज्वलित कर यह मन्त्र पढ़े-

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे, जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्णा - वर्णमनलं, ममीद्धः सर्वतो मुखम् ।।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर '**सङ्कल्प**' पढ़े। यथा-

ॐ तत्सत् । अद्यैतस्य, ब्रह्मणोऽह्नि-द्वितीय-प्रहरार्द्धे, श्वेत-वराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त्त-देशे, अमुक-पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-संवत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नो, अमुक-नाम-शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास, श्राललिता-प्रीत्यर्थे सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे श्रीललिताम्बिका-दिव्य-अष्टोत्तर-शत-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति होमं करिष्ये।

अब '**मूल-मन्त्र**' से '**प्राणायाम**' कर '**विनियोग-ऋष्यादि-न्यास**' करे और '**भगवती ललिता का ध्यान**' एवं '**मानस-पूजन**' करे। यथा-

।। ध्यान ।।

बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनाम् ।
पाशांकुश-धनुर्वाणान्, धारयन्तीं शिवां भजे।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिताम्बिका-

प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये समर्पयामि नमः।

फिर '**मूल-मन्त्र**' पढ़कर अथवा **श्रीललिताम्बिकायै नमः** कहकर '**अग्नि**' के ऊपर जल छिड़के। '**अग्नि**' का '**पञ्चोपचारों से पूजन**' करे तथा **भगवती ललिता** का अग्नि-रूप में ध्यान कर उनका '**पञ्चोपचारों से पूजन**' करे।

अब 'अग्नि' में '**घृत**' या '**पायस**' की आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से प्रदान करे–**ॐ स्यूं हिरण्यायै स्वाहा। ॐ ष्यूं गगनायै स्वाहा। ॐ श्यूं रक्तायै स्वाहा। ॐ व्यूं कृष्णायै स्वाहा। ॐ ल्यूं सुप्रभायै स्वाहा। ॐ रयूं बहु-रूपायै स्वाहा। ॐ य्यूं अति-रक्तायै स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।**

फिर '**मूलं श्रीललिताम्बिकायै स्वाहा श्रीललिताम्बिकाया इदं**'–यह मन्त्र तीन बार पढ़कर तीन आहुतियाँ दे।

इसके बाद–१. '**ॐ गुरवे स्वाहा**', २. '**ॐ परम-गुरवे स्वाहा**', ३. '**ॐ परापर-गुरवे स्वाहा**', ४. '**ॐ परमेष्ठि-गुरवे स्वाहा**'–इन चार मन्त्रों से चारों गुरुओं के लिए और १. '**ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा**', २. '**ॐ भग-मालिन्यै स्वाहा**', ३. '**ॐ नित्य-क्लिन्नायै स्वाहा**'–इन तीन मन्त्रों से तीन प्रधान आवरण-शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे।

फिर इष्ट-देवता के षडङ्गों के लिए छः आहुतियाँ दे–**ॐ ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं** हृच्छक्त्यै स्वाहा। **ॐ क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं** शिरः-शक्त्यै स्वाहा। **ॐ सौः स-क-ल-ह्रीं** शिखा-शक्त्यै स्वाहा। **ॐ ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं** कवच-शक्त्यै स्वाहा। **ॐ क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं** नेत्र-शक्त्यै स्वाहा। **ॐ सौः स-क-ल-ह्रीं** अस्त्र-शक्त्यै स्वाहा।

इसके बाद कामदेवों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा– **ॐ मनोभवाय स्वाहा, ॐ मकर-ध्वजाय स्वाहा, ॐ कन्दर्पाय स्वाहा, ॐ मन्मथाय स्वाहा, ॐ कामदेवाय स्वाहा।**

तब काम-देवों की शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा–**ॐ द्राविण्यै स्वाहा, ॐ क्षोभिण्यै स्वाहा, ॐ आकर्षिण्यै स्वाहा, ॐ वशीकरिण्यै स्वाहा, ॐ सम्मोहिन्यै स्वाहा।**

फिर आठ शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे–**१. ॐ सुभगायै स्वाहा, २. ॐ भगायै स्वाहा, ३. ॐ भग-सर्पिण्यै स्वाहा, ४. ॐ भग-मालायै स्वाहा, ५. ॐ अनङ्गायै स्वाहा, ६. ॐ अनङ्ग-कुसुमायै स्वाहा, ७. ॐ अनङ्ग-मेखलायै स्वाहा, ८. ॐ अनङ्ग-मदनायै स्वाहा।**

तब अष्ट-मातृकाओं को आहुतियाँ दे–**१. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा, २. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा, ३. ॐ कौमार्यै स्वाहा, ४. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा, ५. ॐ वाराह्यै स्वाहा, ६. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा, ७. ॐ चामुण्डायै स्वाहा, ८. ॐ महा-लक्ष्म्यै स्वाहा।**

फिर आठ भैरवों को आहुतियाँ दे– १. ॐ असिताङ्ग-भैरवाय स्वाहा, २. ॐ रुरु-भैरवाय स्वाहा, ३. ॐ चण्ड-भैरवाय स्वाहा, ४. ॐ क्रोध-भैरवाय स्वाहा, ५. ॐ उन्मत्त-भैरवाय स्वाहा, ६. ॐ कपालि-भैरवाय स्वाहा, ७. ॐ भीषण-भैरवाय स्वाहा, ८. ॐ संहार-भैरवाय स्वाहा।

पुनः आठ पीठों को आहुतियाँ दे–१. ॐ काम-रूप-पीठाय स्वाहा, २. ॐ मलय-पीठाय स्वाहा, ३. ॐ कुल - नाग - पीठाय स्वाहा, ४. ॐ कुलान्त - पीठाय स्वाहा, ५. ॐ चौहार-पीठाय स्वाहा, ६. ॐ जालन्धर-पीठाय स्वाहा, ७. ॐ उड्डीयान-पीठाय स्वाहा, ८. ॐ देवी-कोट-पीठाय स्वाहा।

तब दस भैरवों को आहुतियाँ दे–१. ॐ हेतुकाय स्वाहा, २. ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा, ३. ॐ वेतालाय स्वाहा, ४. ॐ अग्नि - जिह्वाय स्वाहा, ५. ॐ कालान्तकाय स्वाहा, ६. ॐ कपालाय स्वाहा, ७. ॐ एक - पादाय स्वाहा, ८. ॐ भीम - रूपाय स्वाहा, ९. ॐ मलयाय स्वाहा, १०. ॐ हाटकेश्वराय स्वाहा।

फिर दस दिक्-पालों को आहुतियाँ दे–१. ॐ इन्द्राय स्वाहा, २. ॐ अग्नये स्वाहा, ३. ॐ यमाय स्वाहा, ४. ॐ निर्ऋताय स्वाहा, ५. ॐ वरुणाय स्वाहा, ६. ॐ वायवे स्वाहा, ७. ॐ कुबेराय स्वाहा, ८. ॐ ईशानाय स्वाहा, ९. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, १०. ॐ अनन्ताय स्वाहा।

पुनः दिक्-पालों के आयुधों को आहुतियाँ दे–१. ॐ वज्राय स्वाहा, २. ॐ शक्त्यै स्वाहा, ३. ॐ दण्डाय स्वाहा, ४. ॐ खड्गाय स्वाहा, ५. ॐ पाशाय स्वाहा, ६. ॐ अंकुशाय स्वाहा, ७. ॐ गदायै स्वाहा, ८. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा, ९. ॐ पद्माय स्वाहा, १०. ॐ चक्राय स्वाहा।

तब बलि-देवताओं को आहुतियाँ दे–१. ॐ वटुकाय स्वाहा, २. ॐ योगिन्यै स्वाहा, ३. ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा, ४. ॐ गणेशाय स्वाहा, ५. ॐ वसवे स्वाहा, ६. ॐ सूर्याय स्वाहा, ७. ॐ शिवाय स्वाहा, ८. ॐ भूताय स्वाहा।

फिर 'स्वाहा'-युक्त चतुर्थ्यन्त भगवती ललिता के नामों को क्रम से पढ़ते हुए आहुतियाँ प्रदान करे। यथा–

१- ॐ श्रीमहा-मनोन्मन्यै नमः स्वाहा। २- ॐ श्रीशक्त्यै नमः स्वाहा। ३- ॐ श्रीशिव-शक्त्यै नमः स्वाहा। ४- ॐ श्रीशि-शङ्कर्यै नमः स्वाहा। ५- ॐ श्रीइच्छा-शक्ति-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा। ६- ॐ श्रीक्रिया-शक्ति-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा। ७- ॐ श्रीज्ञान-शक्ति - स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा। ८- ॐ श्रीशान्त्यातीता कलायै नमः स्वाहा। ९- ॐ श्रीनन्दायै नमः स्वाहा। १०- ॐ श्रीशिव - मायायै नमः स्वाहा। ११- ॐ श्रीशिव - प्रियायै नमः स्वाहा। १२- ॐ श्रीसर्वज्ञायै नमः स्वाहा। १३- ॐ श्रीसुन्दर्यै नमः स्वाहा।

१४- ॐ श्रीसौम्यायै नमः स्वाहा । १५- ॐ श्रीसच्चिदानन्द - विग्रहायै नमः स्वाहा । १६- ॐ श्रीपरात्परा-मय्यै नमः स्वाहा । १७- ॐ श्रीबालायै नमः स्वाहा । १८- ॐ श्रीत्रिपुरायै नमः स्वाहा। १९- ॐ श्रीकुण्डल्यै नमः स्वाहा। २०- ॐ श्रीशिवायै नमः स्वाहा। २१- ॐ श्रीरुद्राण्यै नमः स्वाहा। २२- ॐ श्रीविजयायै नमः स्वाहा। २३- ॐ श्रीसर्वायै नमः स्वाहा। २४- ॐ श्रीसर्वाण्यै नमः स्वाहा। २५- ॐ श्रीभुवनेश्वर्यै नमः स्वाहा।

२६- ॐ श्रीकल्याण्यै नमः स्वाहा। २७- ॐ श्रीशूलिन्यै नमः स्वाहा। २८- ॐ श्रीकान्तायै नमः स्वाहा। २९- ॐ श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः स्वाहा। ३०- ॐ श्रीमालिन्यै नमः स्वाहा। ३१- ॐ श्रीमानिन्यै नमः स्वाहा। ३२- ॐ श्रीशर्वायै नमः स्वाहा। ३३- ॐ श्रीमग्नोल्लासायै नमः स्वाहा। ३४- ॐ श्रीमोहिन्यै नमः स्वाहा। ३५- ॐ श्रीमाहेश्वर्यै नमः स्वाहा। ३६- ॐ श्रीमातङ्ग्यै नमः स्वाहा। ३७- ॐ श्रीशिव-कामायै नमः स्वाहा। ३८- ॐ श्रीशिवात्मिकायै नमः स्वाहा। ३९- ॐ श्रीकामाक्ष्यै नमः स्वाहा। ४०- ॐ श्रीकमलाक्ष्यै नमः स्वाहा। ४१- ॐ श्रीमीनाक्ष्यै नमः स्वाहा। ४२- ॐ श्रीसर्व-साक्षिण्यै नमः स्वाहा। ४३- ॐ श्रीउमा-देव्यै नमः स्वाहा। ४४- ॐ श्रीमहा-काल्यै नमः स्वाहा। ४५- ॐ श्रीश्यामायै नमः स्वाहा। ४६- ॐ श्रीसर्व-जन-प्रियायै नमः स्वाहा। ४७- ॐ श्रीचित्-परायै नमः स्वाहा। ४८- ॐ श्रीचिद्-घनानन्दायै नमः स्वाहा। ४९- ॐ श्रीचिन्मयायै नमः स्वाहा। ५०- ॐ श्रीचित्-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा।

५१- ॐ श्रीमहा-सरस्वत्यै नमः स्वाहा। ५२- ॐ श्रीदुर्गायै नमः स्वाहा। ५३- ॐ श्रीज्वाला दुर्गायै नमः स्वाहा। ५४- ॐ श्रीअति-मोहिन्यै नमः स्वाहा। ५५- ॐ श्रीनकुल्यै नमः स्वाहा। ५६- ॐ श्रीशुद्ध-विद्यायै नमः स्वाहा। ५७- ॐ श्रीसच्चिदानन्द-विग्रहायै नमः स्वाहा। ५८- ॐ श्रीसु - प्रभायै नमः स्वाहा। ५९- ॐ श्रीस्व-प्रभायै नमः स्वाहा। ६०- ॐ श्रीज्वालायै नमः स्वाहा। ६१-ॐ श्रीइन्द्राक्ष्यै नमः स्वाहा। ६२- ॐ श्रीविश्व - मोहिन्यै नमः स्वाहा। ६३- ॐ श्रीमहेन्द्र - जाल - मध्यस्थायै नमः स्वाहा। ६४- ॐ श्रीमाया-मय-विनोदिन्यै नमः स्वाहा। ६५- ॐ श्रीशिवेश्वर्यै नमः स्वाहा। ६६- ॐ श्रीवृषारूढायै नमः स्वाहा। ६७- ॐ श्रीविद्या - जाल -विनोदिन्यै नमः स्वाहा। ६८- ॐ श्रीमन्त्रेश्वर्यै नमः स्वाहा। ६९- ॐ श्रीमहा - लक्ष्म्यै नमः स्वाहा। ७०- ॐ श्रीमहा - काल्यै नमः स्वाहा। ७१- ॐ श्रीफल-प्रदायै नमः स्वाहा। ७२- ॐ श्रीचतुर्वेद-विशेषज्ञायै नमः स्वाहा। ७३- ॐ श्रीसावित्र्यै नमः स्वाहा। ७४- ॐ श्रीसर्व - देवतायै नमः स्वाहा। ७५- ॐ श्रीमहेन्द्राण्यै नमः स्वाहा।

७६- ॐ श्रीगणाध्यक्षायै नमः स्वाहा। ७७- ॐ श्रीमहा - भैरव - मोहिन्यै नमः स्वाहा। ७८- ॐ श्रीमहा - मय्यै नमः स्वाहा। ७९- ॐ श्रीमहा - घोरायै नमः स्वाहा। ८०- ॐ श्रीमहा - देव्यै नमः स्वाहा। ८१- ॐ श्रीमदापहायै नमः स्वाहा। ८२- ॐ श्रीमहिषासुर - संहन्त्र्यै नमः स्वाहा। ८३- ॐ श्रीचण्ड - मुण्ड - कुलान्तकायै नमः स्वाहा। ८४- ॐ श्रीचक्रेश्वरी चतुर्वेदायै नमः स्वाहा। ८५- ॐ श्रीसर्वाद्यै नमः स्वाहा। ८६- ॐ श्रीसुर - नायिकायै नमः स्वाहा। ८७- ॐ श्रीषड्-शास्त्र-निपुणायै नमः स्वाहा। ८८- ॐ श्रीनित्यायै नमः स्वाहा। ८९- ॐ श्रीषड् - दर्शन-विचक्षणायै नमः स्वाहा। ९०- ॐ श्रीकाल-रात्र्यै नमः स्वाहा। ९१- ॐ श्रीकलातीतायै नमः स्वाहा। ९२- ॐ श्रीकवि-राज - मनोहरायै नमः स्वाहा। ९३- ॐ श्रीशारदा तिलकायै नमः स्वाहा। ९४- ॐ श्रीतारायै नमः स्वाहा। ९५- ॐ श्रीधीरायै नमः स्वाहा। ९६- ॐ श्रीशूर - जन - प्रियायै नमः स्वाहा। ९७- ॐ श्रीउग्र - तारायै नमः स्वाहा। ९८- ॐ श्रीमहा -मार्यै नमः स्वाहा। ९९- ॐ श्रीक्षिप्र-मार्यै नमः स्वाहा। १००- ॐ श्रीरण-प्रियायै नमः स्वाहा।

१०१- ॐ श्रीअन्न-पूर्णेश्वरी मात्रे नमः स्वाहा। १०२- ॐ श्रीस्वर्ण-कान्ति-तटि-प्रभायै नमः स्वाहा। १०३- ॐ श्रीस्वर-व्यञ्जन-वर्णाढ्यायै नमः स्वाहा। १०४- ॐ श्रीगद्य - पद्यादि - कारणायै नमः स्वाहा। १०५- ॐ श्रीपद - वाक्यार्थ - निलयायै नमः स्वाहा। १०६- ॐ श्रीविन्दु - नादादि-कारणायै नमः स्वाहा। १०७- ॐ श्रीमोक्षेशी-महिषी-नित्यायै नमः स्वाहा। १०८- ॐ श्रीभुक्ति-मुक्ति -फल-प्रदायै नमः स्वाहा। १०९- ॐ श्रीविज्ञान-दायिनी प्राज्ञायै नमः स्वाहा। ११०- ॐ श्रीप्रज्ञान-फल-दायिन्यै नमः स्वाहा। १११- ॐ श्रीअहङ्कारा कलातीतायै नमः स्वाहा। ११२- ॐ श्रीपरा-शक्तिः परात्परायै नमः स्वाहा।

उक्त 'नाम-मन्त्रों' से आहुति देने के बाद 'श्रीललिताम्बिकार्पणमस्तु' ऐसा कहकर 'वेदी' के सम्मुख जल छोड़े। फिर चार आहुतियाँ घी की दें—१ ॐ भूः स्वाहा, २ ॐ भुव स्वाहा, ३ ॐ स्वः स्वाहा, ४ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

अन्त में श्रीललिताम्बिका के पुनः श्रीचक्र अथवा हृदय में विराजने के भावना करते हुए 'भस्म-वन्दन' तथा 'विसर्जन' करना चाहिए। यथा—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषं । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषं।।

ॐ भो भो वह्ने महा-शक्ते, सर्व-काम-प्रसाधक।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सान्निध्यं कुरु सादरम्।।